मैथिलीशरण गुप्त और उनका काव्य

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2020

प्रस्तावना

- मैथिलीशरण गुप्त 'द्विवेदी युग' के प्रतिनिधि कवि हैं।
- इन्होने 'रसिकेश' और 'रसिकेन्द्र' नाम से ब्रजभाषा में 'मधुप' नाम से अनुवाद तथा नित्यानन्द और भारतीय नाम से लेखन किया।
- इनका जन्म ०३ अगस्त, १८८३ ई० में तथा निधन १२ दिसम्बर १९६४ ई० को हुआ था।

- इन्हें काव्य रचना का संस्कार विरासत में मिला। इनके पिता सेठ रामचरण कनकलता, स्वर्णलता और हेमलता आदि उपनामों से कविता लिखते थे। 'रहस्य रामायण' और 'सीताराम दम्पत्ति' इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।
- मैथिलीशरण गुप्त को पिता से 'रामभक्ति' और अंग्रेजों के प्रति नफरत का संस्कार मिला।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी गुप्त जी के काव्य गुरू थे।

करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद।
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।।

(साकेत नवम सर्ग)

अन्य प्रेरणास्रोत

- बाल सखा- मुंशी अजमेरी
- कुर्री सुदौली नरेश- राजा रामपाल सिंह
- राधाकृष्ण दास (काशी)
- महात्मा गांधी जी द्वारा मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की गयी।
- महात्मा गांधी द्वारा ही कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को 'गुरूदेव, सी० एफ० एन्ड्रयूज को 'दीनबन्धु, चित्तरंजन दास को 'देशबन्धु, राजेन्द्र प्रसाद को 'देशरत्न' की उपाधि दी गयी थी।

मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताएँ

1. कालानुसरण की क्षमता

द्विवेदी युग से लेकर नई कविता तक बदलते कथ्य एवं शिल्प को अपनी रचनाधर्मिता में स्थान दिया। उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण किया।

हमको समय को देखकर ही नित्य चलना चाहिए,
बदले हवा जब जिस तरह हमको बदलना चाहिए।
विपरीत विश्व प्रवाह के निज नाव जा सकती नहीं,
अब पूर्व की बातें सभी प्रस्ताव पा सकती नहीं।।

2. खड़ी बोली के उन्नायक

- द्विवेदी जी द्वारा परिष्कृत खड़ी बोली को ब्रज, अवधी और मैथिली काव्य भाषा की भांति स्वाभाविक कोमलता प्रदान करने और जन जन के मन में स्थान दिलाने का कार्य। भारत के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद कहते थे कि गुप्त जी मेरी तीन तीन पीढ़ियों को हिन्दी सिखाने वाले कवि हैं।
- "स्व० मैथिलीशरण गुप्त 'दद्दा' मेरे गुरू स्थानीय थे। स्वयं उन्हें यह बात आसानी से स्वीकार्य न होगी क्योंकि इस शिष्य की बहुत सी प्रवृत्तियाँ उन्हें ना पसन्द थी। लेकिन मैं तो जानता हूँ कि बचपन से ही, जब से हिन्दी बोलना और फिर पढ़ना सीखा, उनकी कविता पर पलकर किशोर हुआ।"

  –अज्ञेय, स्मृतिलेखा, पृ० २२
- "बांग्ला, अंग्रेजी, संस्कृत और ब्रजभाषा का ज्ञान प्राप्त कर चुकने के पश्चात् कैशोर में मैंने खड़ी बोली का श्रीगणेश किया। उस समय जो कवि और लेखक मेरी भाषा शिक्षा के आधार थे, उनमें कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी विशिष्ट व्यक्ति हैं।"

  –सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

3. गाँधी युग के प्रतिनिधि कवि

सत्याग्रह, स्वावलंबन (चरखा), वैष्णवता, अहिंसा और रामराज्य (लोकतंत्र) गांधी जी के मूल मंत्रों को अपनाया-

राजा हमने राम तुम्हीं को है चुना, करो न तुम यों हाय! लोकमत अनसुना।
जाओ यदि जा सको, रौंद हमको यहाँ, यों कह पथ में लेट गये बहुजन वहाँ।।

× × × × ×

सब और लाभ ही लाभ, बोध विनिमय में, उत्साह मुझे है विविध वृत्त संचय में।
तुम अर्द्धनग्न क्यों रहो अशेष समय में, आओ हम कातें-बुनें गान की लय में।।

4. साहित्य का व्यापक फलक

गुप्त जी का काव्य भारत की सांस्कृतिक यात्रा का इतिहास है-

- सतयुग के चरित्रों पर आधारित काव्य- नहुष, शकुन्तला, चन्द्रहास, तिलोत्तमा।
- त्रेता युग के चरित्रों पर आधारित काव्य- पंचवटी, साकेत, प्रदक्षिणा।
- द्वापर युग के चरित्रों पर आधारित काव्य- वक् संहार, जयद्रथ वध, रंग में भंग, वन वैभव, सैरन्ध्री, हिडिम्बा, द्वापर आदि।
- बौद्ध युगीन काव्य- अनध, यशोधरा और कुणालगीत।
- ऐतिहासिक युगीन काव्य- सिद्धराज, प्लासी का युद्ध, गुरूकुल, काबा और कर्बला आदि।
- राष्ट्रीय महत्व के काव्य- भारत-भारती, स्वदेश-संगीत, वैतालिक, हिन्दू, किसान।

5. मानवतावादी कवि

- धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना से पुष्ट।
- नैतिक एवं आदर्श से अनुप्राणित।
- वैष्णवता से युक्त

न तन सेवा, न मन सेवा
मुझे है इष्ट जन सेवा
सदा सच्ची भुवन-सेवा

× × ×

अर्पित है ये मनुज काय
बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।

× × ×

प्रस्थान वन की ओर या लोक मन की ओर।
होकर न धन की ओर, हैं राम जन की ओर।।

6. भारतीय संस्कृति के व्याख्याता

- सौहार्द, प्रेम, भाईचारा, त्याग, अहिंसा, धर्म
- गार्हस्थ एवं परिवार प्रियता (पंचवटी, साकेत)।

7. उपेक्षित पात्रों का चरित्र परिष्कार

- नहुष, हिडिम्बा, सैरन्ध्री, कैकयी, उर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया आदि।

४. नारी स्वाभिमान के रक्षक

हाय वधू ने वर विषयक एक वासना ही पायी।

माँ, बहन और बेटी क्या संग नहीं वो जायी।।

× × × ×

अविश्वास हा अविश्वास ही, नारी के प्रति नर का।

नर के तो सौ दोष क्षमा हैं, स्वामी है वह घर का।।

× × × ×

एक नहीं दो-दो मात्राऐं, 'नर' से भारी 'नारी'।

9. राष्ट्रीयता के स्वर

- तुलसी+गांधी = मैथिलीशरण गुप्त
- दैन्य एवं पाखण्ड से रहित राष्ट्रीयता
- प्राचीन के प्रति अनुराग
- बलिदान त्याग की प्रेरणा

जिस कुल, जाति, देश के बच्चे
दे सकते हैं यों बलिदान।
उसका वर्तमान कुछ भी हो,
पर भविष्य है बड़ा महान।।

(गुरूकुल)

- भविष्य की आशा

10. प्रगतिशील एवं नवजागरण के उन्नायक

- डॉ रामविलास शर्मा ने द्विवेदी युग को हिन्दी नवजागरण का तृतीय चरण कहा है। गुप्त जी इसके प्रतिनिधि कवि हैं।

- डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अमरीका के राष्ट्रपति जॉन एडम्स के 'स्वदेश' पत्र में प्रकाशित १८७० के पत्र का उल्लेख किया है जिसमें रूस तथा अमेरिका के आधुनिक विकास का क्रमबद्ध रूप है–

- ''मुझे राजनीति और विशुद्ध का अध्ययन करना है जिससे मेरे बेटों को गणित और दर्शन पढ़ने की सुविधा हो सके। मेरे बेटों को पढ़ना चाहिए गणित और दर्शन, भूगोल, प्रकृति इतिहास, स्थापत्य संतरण, वाणिज्य और कृषि जिससे फिर उनके पुत्रों को अधिकार मिले कि वे चित्रकला, कविता, संगीत, स्थापत्य, मूर्तिकला पढ़ निर्माण और चीनी सानी सीख सकें।''

- गुप्त जी ने माईकेल मधुसूदन के मेघनाथ वध का बंगला से अनुवाद करके हिन्दी भाषी क्षेत्र को प्रगतिशीलता की दृष्टि दी।

"सर्वत्र एक अपूर्व युग का हो रहा संसार है,

देखो दिनोंदिन बढ़ रहा, विज्ञान का विस्तार है।

अब तो उठो, क्यों पड़ रहे हो, व्यर्थ सोंच-विचार में,

सुख दूर, जीना भी है कठिन, भ्रम बिना संसार में।।

11. सर्वधर्म समन्वय

इस महामंत्र का जप करो, जो हिन्दुस्तान में रहे चाहे किसी जाति का क्यों न हो, वह हिन्दू है। हिन्दू की सहायता करो। बंगाली, मराठा, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्राह्मणों सबका एक हाथ पकड़ो।

(भारतेन्दु के बलिया वाले
व्याख्यान की पंक्तियाँ।)

➢ गुप्त जी कहते हैं कि-

जाति, धर्म या सम्प्रदाय का नहीं भेद व्यवधान यहाँ,

सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सब सम्मान यहाँ।

राम-रहीम, बुद्ध-ईसा का, सुलभ एक ध्यान यहाँ।

मातृमंदिर, गुप्त जी।

12. काव्य विधान के नवीन प्रयोग

- मूलतः प्रबंध कवि किन्तु उत्तरोत्तर क्रम में गीत शैली, आत्मसंलापात्मक शैली, नाटकीय शैली, गद्यात्मक काव्य शैली को भी प्रश्रय।

- मैथिलीशरण गुप्त का काव्य परम्परापुष्टता और प्रयोगधर्मिता का संगम है। (परम्परा तोड़े बिा आधुनिक होने की कला में पारंगत)
- परम्परागत रचनाओं को युगीन चेतना के अनुरूप ढालने में असाधारण सफलता मिली है।
- गुप्त जी के काव्य में गृहस्थ कवि की भक्ति भावना है।
- मैथिलीशरण गुप्त नर-नारी के जीवन्त संबंध और नारी स्वातंत्रय के पक्षधर थे किन्तु प्रेमपूर्ण संबंधों के पक्षधर होने पर भी वह यौन स्वातंत्रय के संदर्भ में गुप्त जी का दृष्टिकोण एक गृहस्थ के दृष्टिकोण की भांति मर्यादित है।
- सुरूचि की सीापना, उदात्तता की प्रतिष्ठा, नैतिक मूल्यों का महत्त्व और मानवता का गुणगान कवि के भीतरी आह्वाहन है।

समाहार

- ‘‘मैथिलीशरण गुप्त की इस महत्ता इस बात में है कि व्यापक आलोचकीय अनिच्छा के बावजूद वे आधुनिक काल के एक बड़े कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के कई कारण बताये जाते हैं। जैसे सीधी सरल भाषा, पौराणिक आख्यान, व्यापक हिंदू नैतिक मूल्यों का समर्थन और राष्ट्रीय विचारधारा की अभिव्यक्ति।’’

डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी

धन्यवाद